BELIEVE

IN YOURSELF

विविधा

2017-18

GOVT. PT. SHYAMACHARAN SHUKLA COLLEGE

(SHANKAR NAGAR), DHARSIWA, Dist. Raipur (C.G.)

Email : gcollegedharsiwa@gmail.com, Website : www.gpssc.in, Contact No. 92039394041

Scanned with CamScanner

विविधा

वार्षिक पत्रिका

2017-18

❖

संरक्षक

डॉ. डी.एस. जगत

प्राचार्य

❖

पत्रिका समिति

डॉ. श्रीमती सुलेखा अग्रवाल (संयोजक)

सदस्य

डॉ. सुनीता दुबे

डॉ. रश्मि कुजूर

सुश्री अदिती भगत

GOVT. PT. SHYAMACHARAN SHUKLA COLLEGE

Email : gcollegedharsiwa@gmail.com, Website : www.gpssc.in, Contact No. 92039394041

Scanned with CamScanner

विविधा

वार्षिक पत्रिका 2017-18

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / शीर्षक	संकलनकर्ता	कक्षा / विभाग	पृ.क्र.
1.	**विशेष उपलब्धि**	-	-	
2.	महाविद्यालय के गौरव	-	-	
3.	अभिप्रेरणात्मक पहल	-	-	
	कविता			
4.	भारत के नौजवानों	सागर कुमार	एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर (गणित)	
5.	नया युग	संदीप अगवाल	एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
6.	एक बार की बात है...	गोपाल अग्रवाल	एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
7.	शहस से गाँव अच्छा है...	गोपाल अग्रवाल	एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
8.	हम सच्चाई कहते है	लोकेश कुमार सेन	एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
9.	बेटी है तो, है सृष्टि सारी	शिल्पा साहू	एम.ए. प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)	
10.	माँ	कु. नंदनी साहू	बी.ए. तृतीय	
11.	माँ : एक वरदान	भेनेश्वरी निषाद	बी.ए. तृतीय	
12.	चलते रहो	शाहिना परवीन	बी.ए. तृतीय	
13.	बस एक कदम और	शाहीना परवीन	बी.ए. तृतीय	
14.	सर्व शक्तिमान तिरंगा	कृष्ण साहू	बी.ए. द्वितीय	
15.	बेटी बचाओ	कु. भारती निषाद	बी.कॉम. प्रथम	
16.	गुरू महिमा	हिकेश कुमार साहू	एन.एस.एस. छात्र	
	छत्तीसगढ़ी छटा			
17.	मोर धरती मैया के महिमा हे अपरम्पार	डॉ. श्रीमती सुलेखा अग्रवाल	सहा. प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य विभाग)	
18.	छत्तीसगढ़ी गीत - ''मोर जतन करव रे! मैं धरती के श्रृंगार अंव''	श्री रणजीत सिंह	अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)	
19.	ददा ए हमर देश के	कु. नेहा परनिहा	एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
20.	मोर छत्तीसगढ़ के कोरा	लोकेश कुमार सेन	एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (राज.शास्त्र)	
21.	छत्तीसगढ़ी जीवन	शीतल वर्मा	एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर (गणित)	
22.	हमर छत्तीसगढ़	कु. जानकी निर्मलकर	बी.ए. तृतीय	
23.	गरीब के सपना	कु. योगेश्वरी निषाद	बी.ए. तृतीय	
24.	कहाँ ले मोबाईल आ गे रे	सुबोध दुबे	बी.कॉम. प्रथम	
	ज्ञानवर्धक बातें			
25.	बाइबल के नीतिवचन	श्रीमती रश्मि कुजूर	सहा. प्राध्यापक (समाज शास्त्र विभाग	
26.	प्रेरणात्मक विचार	कु. प्रीति वर्मा	बी.ए. तृतीय	
	आलेख			
27.	छत्तीसगढ़ के प्रमुख सम्मान /पुरस्कार	डॉ. श्रीमती शबनूर सिद्दिकी	प्राध्यापक (इतिहास विभाग)	
28.	भारत के लोक साहित्य	डॉ. श्रीमती सुलेखा अग्रवाल	सहा. प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य विभाग)	

Scanned with CamScanner

क्र.	विषय / शीर्षक	संकलनकर्ता	कक्षा / विभाग	पृ.क्र.
29.	कोदूराम दलित का जीवन परिचय	रूखमणी देवांगन	एम.ए. हिन्दी साहित्य	
30.	छत्तीसगढ़ी साहित्य की विकास यात्रा	जानकी धीवर	एम.ए. हिन्दी साहित्य चतुर्थ सेमेस्टर	
31.	पं. सुन्दरलाल शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख	तरूण पटेल	एम.ए. हिन्दी साहित्य चतुर्थ सेमेस्टर	
32.	समाज के वास्तविक शिल्पकार होते है शिक्षक	लक्ष्मी नारायण साहू	एम.ए. हिन्दी साहित्य तृतीय सेमेस्टर	
33.	कामायनी का संक्षिप्त परिचय	गंगा राम साहू	एम.ए. प्रथम सेमेस्टर	
34.	Women empowerment -	Dr. Sunita Dubey	Assi. Prof. Depart. of Commerce	
35.	English as a life skill -	Dr. Sushama Mishra	Assi. Prof. Depart. of English	
36.	Aims and objectives of NCC -	Lieutenant Sushama Mishra	Associate NCC Officer	
37.	Posivity is key to happiness -	Miss Aditi Bhagat	Assi. Prof. Depart. of Commerce	
38.	benefits of Yoga -	Dr. Sanjay Kumar Singh	Assi. Prof. (Commerce), Program Officer (NSS)	
	निबंध			
39.	ज्ञान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञानता नहीं, बल्कि ज्ञान का भ्रम है	पूजा परगनिहा	एम.ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर	
40.	पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का सामाजिक एवं राजनैतिक योगदान	विनय कुमार वर्मा	एम.ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर	
41.	भारत की भाषा और संस्कृति	आसमा परवीन	एम.ए. हिन्दी साहित्य प्रथम सेमेस्टर	
42.	रक्त दान का महत्व	सुनीत कुमार वर्मा	बी.एस.सी. तृतीय (गणित)	
43.	राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी	कु. मीरा कुम्भकार	बी.ए. द्वितीय	
	विभागीय अकादमिक उपलब्धियाँ			
44.	प्राचार्य के कार्य			
45.	इतिहास विभाग	डॉ. श्रीमती शबनूर सिद्दिकी	प्राध्यापक (इतिहास)	
46.	राजनीति विभाग	डॉ. श्रीमती संध्या सिंगारे	प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)	
47.	वनस्पति शास्त्र विभाग	श्री कौशल किशोर	सहा. प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)	
48.	हिन्दी विभाग	डॉ. श्रीमती सुलेखा अग्रवाल	सहा. प्राध्यापक (हिन्दी साहित्य)	
49.	अंग्रेजी विभाग	डॉ. सुषमा मिश्रा	सहा. प्राध्यापक (अंग्रेजी साहित्य)	
50.	भौतिक शास्त्र विभाग	श्रीमती जी. नाग भार्गवी	सहा. प्राध्यापक (भौतक शास्त्र)	
51.	वाणिज्य विभाग	डॉ. श्रीमती सुनीता दुबे	सहा. प्राध्यापक (वाणिज्य)	
52.	समाजशास्त्र विभाग	श्रीमती रश्मि कुजूर	सहा. प्राध्यापक (समाज शास्त्र)	
53.	रसायन शास्त्र विभाग	श्री हेमंत कुमार देशमुख	सहा. प्राध्यापक (रसायन शास्त्र)	
54.	गणित विभाग	कु. अर्चना तिवारी	अतिथि व्याख्याता (गणित)	
55.	क्रीड़ा विभाग	श्री अनिल कुमार महोबिया	क्रीड़ा अधिकारी	
56.	NSS -	श्री संजय कुमार सिंह	कार्यक्रम अधिकारी (है)	
57.	Red Cross -	डॉ. सुनीता दुबे	प्रभारी	
58.	Red Ribbon Club -	डॉ. सुषमा मिश्रा	प्रभारी	

Scanned with CamScanner

संपादकीय

मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है और उसके मन में जिज्ञासा की भावना अत्यधिक है। वह हर प्रकार से ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। आज मनुष्य आधुनिक युग में पहुँच चुका है और वह नवीन से नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता है, जिसके लिए कम्प्यूटर, मोबाईल आदि साधन अत्यंत उपयोगी है। परन्तु प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक पत्र–पत्रिकाएँ सूचना एवं ज्ञान के प्रमुख साधन के रूप में दिखाई पड़ती है। हिन्दी पत्रिका सामाजिक व्यवस्था के लिए चतुर्थ स्तम्भ का कार्य करती है और अपनी बात को मनवाने के लिए एवं अपने पक्ष में साफ–सुथरा वातावरण तैयार करने में सदैव अमोघ अस्त्र का कार्य करती है। हिन्दी के विविध आन्दोलन और साहित्यिक एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों को सक्रिय करने में हिन्दी पत्रिकाओं की अहम् भूमिका रही है। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आलोचना यात्रावृतांत, जीवनी, आत्मकथा तथा शोध से सम्बन्धित आलेखों का नियमित प्रकाशन इनका मूल उद्देश्य है। अत हम कह सकते है कि पत्रिका के द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगो को अपनी बौद्धिक क्षमता अनुभुतियो एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है।

विविध विषयों के ज्ञान को संग्रहित, संचित एवं संवर्द्धित करने के उद्देश्य से शासकीय पं.श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय द्वारा विविधा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है, इस बहुउद्देश्यीय 'विविधा' पत्रिका का लाभ समस्त महाविद्यालयीन परिवार एवं छात्र–छात्राएं ले सकेगें।

धन्यवाद

डॉ. सुलेखा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
हिन्दी विभागाध्यक्ष

Scanned with CamScanner

प्राचार्य की कलम से...

शासकीय पंडित श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय (शंकरनगर) धरसींवा रायपुर की स्थापना 14 अगस्त 1989 को हुई थी। महाविद्यालय ने अपने स्थापना के 28 वर्ष पूरे कर लिए हैं। वर्तमान में महाविद्यालय को 2014 से स्वयं का भवन प्राप्त हो चुका है। महाविद्यालय पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के संबद्ध है। महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के अध्यापन एवं अध्ययन की सुविधाऐं है। स्नातकोत्तर स्तर 2014 मे एम.ए. राजनीति विज्ञान, तथा 2015 से एम.ए. हिन्दी साहित्य तथा एम.एससी. गणित, की कक्षायें संचालित है। तथा 2017 से वाणिज्य संकाय में बी.कॉम प्रथम वर्ष भी प्रारंभ हो चुका है। इसका संचालन तथा वित्तीय परिक्षेत्र छत्तीसगढ शासन के अधीन है।

महाविद्यालय में शासन के निर्देशानुसार अकादमिक गतिविधियां सुचारु रुप से वर्ष भर संचालित होती है। तथा विभिन्न कार्यक्रम एवं दिवस का आयोजन समय–समय पर किया जाता है। जिससे विद्यार्थियों का प्रतिभा उजागर होता है।

महाविद्यालय ने वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन सत्र 2013–14 से प्रारंभ किया तथा तब से पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। पत्रिका का नामकरण विविधा के रुप में किया गया जिसका अर्थ, विविधताओं से युक्त होता है। वार्षिक पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थी, शैक्षणिक/अशैक्षणिक कर्मचारियों को संकलनकर्ता के रुप में अपने विचारों, अभिव्यक्तियों को रचनाओ के रुप में प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता है, साथ ही वर्षभर हुई अकादमिक गतिविधियों को आकर्षक एकरुपता के साथ महाविद्यालय के प्रतिबिम्ब रुप में विविधा निरंतर प्रकाशित हो रही है।

डॉ. डी.एस. जगत
(प्राचार्य)

Scanned with CamScanner

बलरामजी दास टंडन
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़
भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./05/पीआरओ/रास/18
रायपुर, दिनांक 10 जनवरी 2018

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शासकीय पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय, धरसींवा, रायपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका **'विविधा'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएं, विद्यार्थियों के रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करती हैं। इसके जरिए विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि को प्रस्फुटित होने का अवसर प्राप्त होता है। आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की नवोदित प्रतिभाओं को आगे आने का समुचित अवसर प्राप्त हो सकेगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(बलरामजी दास टंडन)

Scanned with CamScanner

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री

Dr. RAMAN SINGH
CHIEF MINISTER

DO. No. 205 / VIP / 2017
DATE 03/11/17

महानदी भवन, मंत्रालय
नया रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492002
Mahanadi Bhawan, Mantralaya
Naya Raipur, Chhattisgarh
Ph. : (O) - 0771-2221000-01
Fax : (O)- 0771-2221306
Ph. : (R) - 0771-2331000-01
Ph. : (R) - 0771-2443399
Ph. : (R) - 0771-2331000

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय, धरसींवा जिला रायपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका "विविधा" का प्रकाशन किया जा रहा है।

छात्र–छात्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इस पत्रिका में महाविद्यालय के रचनाशील प्राध्यापकों तथा छात्र–छात्राओं की मौलिक रचनाएं प्राथमिकता से प्रकाशित की जानी चाहिए। पत्रिका से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियां भी लोगों तक पहुंचती हैं।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(डॉ. रमन सिंह)

Scanned with CamScanner

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
मंत्री,
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
छत्तीसगढ़ शासन.

फोन : 0771-2510321,
(मंत्रालय) Telefax - 2221321
एम 3-13, 15
मंत्रालय, महानदी भवन, नया रायपुर
निवास : बी-1, शंकर नगर, रायपुर (छ. ग.)
0771-2424749
Telefax - 2446440
भिलाई : सेक्टर-9, सड़क नं.-11, बंगला नंबर-1,
भिलाई, जिला-दुर्ग
: 0788-2242591

क्रमांक 70 /मंत्री/रा.आ.प्र.पु.,उ.शि.कौ.वि.,त.शि.,रो.,वि.प्रौ./201 रायपुर, दिनांक 09/1/18

// संदेश //

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय (शंकर नगर) धरसींवा, रायपुर (छ.ग.) द्वारा वार्षिक पत्रिका **"विविधा"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकायें विद्यार्थियों की रचनात्मक व कलात्मक गतिविधियों को सन्वर्धित करने का सशक्त माध्यम होती है।

आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभाओं को व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त होगा।

महाविद्यालयीन पत्रिका **"विविधा"** के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रेमप्रकाश पाण्डेय)

प्रति,
प्राचार्य,
शास. पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय,
धरसींवा रायपुर (छ.ग.)

Web Site-www.premprakashpandey.net
Email - ministerppp@gmail.com, premprakashpandeyji@gmail.com
Face Book - www.facebook.com/premprakashpandeyofficial

एक कदम स्वच्छता की ओर

Scanned with CamScanner

देवजी भाई पटेल

- अध्यक्ष - छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)
- विधायक - धरसींवा (क्षेत्र क्रमांक-47), रायपुर (छ.ग.)
- पूर्व अध्यक्ष - छत्तीसगढ़ स्टेट बेवरेजेस कॉर्पोरेशन, रायपुर (छ.ग.)
- पूर्व अध्यक्ष - कृषि उपज मण्डी समिति, रायपुर (छ.ग.)
- सदस्य - छत्तीसगढ़ राज्य कृषि विपणन बोर्ड
- सदस्य - द.पू.म.रे. मंडल रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति

निवास : सरस्वती सॉ मिल, बिलासपुर रोड, फाफाडीह, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-4050944
0771-2881700
फैक्स : 0771-2881700
ई-मेल : devji2605@gmail.com

पत्र क्र. : 9/2018-19

दिनांक 4/4/18

शुभकामना संदेश

पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविघालय धरसींवा (रायपुर) के द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका "विविधा" का प्रकाशन किया जा रहा है, यह जानकर प्रसन्नता हूई। महाविघालय की यह पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं के रचनात्मक लेखन एवं बौध्दिक विकास में वृध्दि होगी। वार्षिक पत्रिका महाविघालय के वर्षभर की गतिविधियों का दर्पण सिध्द होगा। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं महाविघालय परिवार एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनांए देता हूँ।

आपका

(देवजी भाई पटेल)

Scanned with CamScanner

डॉ. शिवकुमार पाण्डेय
कुलपति

Dr. S.K. Pandey
Vice-Chancellor

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), भारत
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.), INDIA
Office : +91-771-2262857, Fax : +91-771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.org.in
Website : www.prsu.ac.in

रायपुर, दिनांक 30 अक्टूबर, 2017

संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय पं.श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय, धरसींवा, रायपुर द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका सत्र 2017–18 **'विविधा'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

युवाओं के रचनात्मक ऊर्जा के विकास, सृजन–क्षमता का प्रदर्शन, व्यक्तित्व एवं अभिरुचि को विकसित करने के लिए महाविद्यालयीन पत्रिका एक सशक्त माध्यम होती है।

आशा है महाविद्यालयीन पत्रिका **'विविधा'** महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों एवं छात्र–छात्राओं के साहित्यिक, सांस्कृतिक सृजनात्मकता को विकसित एवं प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ.एस.के.पाण्डेय)

प्रति,
प्राचार्य,
शासकीय पं.श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय,
धरसींवा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

Scanned with CamScanner

विशेष उपलब्धि

Ph.D. Awards :-

Ph.D Awarded to Dr. G. Nag Bhargavi , Assistant Professor of Physics on dated 14th 2018 of March from National Institute of Technology, Raipur (C.G.) on the topic 'Structural, electrical and optical behaviour of rare earth – doped Barium – Zirconium Titanate (BZT)Perovskite type compounds.

Ph.D Awarded to Dr. Rashmi Kujur, Assistant Professor of Sociology on dated 19th of March 2018 from Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.), under the guidance of Prof. P.K.Sharma, Head, SoS in Sociology, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.). The thesis was on the title ' A Study of Health Status of Birhor and Hill Korwa particularly Vunerable Tribal Group's Women (with special reference to Jashpur and Raigarh District of Chhattisgarh).

Young Scientist Award :-

One of our eminent faculty -
Dr. G. Nag Bhargavi, Assistant Professor of Physics has achieved the honour of **'16th Chhattisgarh Young Scientist Award -2018'** for Best Research paper presentation on dated 28th of Feb. 2018, Organized by Durg University, Durg (C.G.), sponsored by Chhattisgarh Council of Science & Technology.

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय के गौरव

- महाविद्यालय की छात्रा कु. निवेदिता वर्मा, बी.एस.सी.तृतीय, ने जनवरी 2018 को रायपुर में आयोजित 18वें वेस्ट जोन राष्ट्रीय टेनिक्विट प्रतियोगिता (महिला टीम व मिश्रित युगल)में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व किया व प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ राज्य को द्वितीय स्थान (रजत पदक) प्राप्त हुआ। कु. निवेदिता वर्मा को पंकज विक्रम अवार्ड छत्तीसगढ शासन द्वारा खेल दिवस 2017–18 के लिए खेल एवं युवा कल्याण द्वारा 15000 रुपये के नगद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- महाविद्यालय की छात्रा कु. गीतांजली वर्मा ने जनवरी 2018 को रायपुर में आयोजित 18वें वेस्ट जोन राष्ट्रीय टेनिक्विट प्रतियोगिता (महिला टीम व मिश्रित युगल) में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व किया व प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ राज्य को द्वितीय स्थान (रजत पदक) प्राप्त हुआ।

- महाविद्यालय के छात्र संजय कुमार पटेल, बी.कॉम.प्रथम ने जनवरी 2018 को रायपुर में आयोजित 18वें वेस्ट जोन राष्ट्रीय टेनिक्विट प्रतियोगिता (पुरुष टीम व मिश्रित युगल) में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व किया व प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ राज्य को द्वितीय स्थान (रजत पदक) प्राप्त हुआ।

- सत्र 2017–18 में हमारे महाविद्यालय के छात्र कबड्डी एथलेटिक्स चयन स्पर्धा क्षेत्र स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया। छात्रा वर्ग से दो छात्रा अंतर्महाविद्यालयीन तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमें 100 मीटर फ्री स्टाईल, 100 मीटर बटर फ्लाई में कु. रमा धीवर बी.ए. द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और इनका चयन पं. रविशंकर विश्व विद्यालय तैराकी प्रतियोगिता के टीम के लिए चयन किया गया। यह प्रतियोगिता अखिल भारतीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिता चंडीगढ़ में आयोजित की गई थी।

Scanned with CamScanner

अभिप्रेरणात्मक पहल

गोल्ड मेडल

महाविद्यालय में प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को सत्र 2017–18 से स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है। यह पदक विधायक, जनप्रतिनिधियों तथा महाविद्यालय के प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक/क्रीड़ा अधिकारी की सहयोग राशि से प्रदान किया जाता है।

सत्र 2017–18 में प्रदत्त स्मृतिपुरस्कार/स्वर्ण पदक

क्र.	पुरस्कार / (गोल्ड मेडल) का नाम	पुरस्कार प्रायोजक का नाम	विद्यार्थियों का नाम
1.	**Best Student of The Year**	डॉ. डी.एस. जगत, प्राचार्य	निरंक (पात्र छात्र नहीं मिलने के कारण)
2.	स्व. श्री शिवजी भाई पटेल स्मृति पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ छात्र – स्नातक विज्ञान संकाय)	माननीय श्री देवजी भाई पटेल विधायक धरसींवा एवं अध्यक्ष छ.ग.पाठ्य पुस्तक निगम	चारू वर्मा बीएससी तृतीय वर्ष (गणित)
3.	स्व. श्री तुलसी भाई पटेल स्मृति पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ छात्र – स्नातक कला/वाणिज्य संकाय)	माननीय श्री देवजी भाई पटेल विधायक धरसींवा एवं अध्यक्ष छ.ग.पाठ्य पुस्तक निगम	टोमेश्वरी साहू बी.ए. तृतीय वर्ष
4.	स्व. श्री जोहना राम एवं मोहिनी बाई स्मृति पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ स्वयं सेवक –रा.से.यो.)	सुश्री अदिती भगत सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)	कृष्णा साहू बी.ए. द्वितीय वर्ष
5.	स्व. श्री फिलिप कुजूर स्मृति पुरस्कार (समाजशास्त्र विशय में सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी)	डॉ रश्मि कुजूर सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)	उत्तरा निर्मलकर बी.ए. तृतीय वर्ष
6.	स्व. डॉ. जी.पी.राय स्मृति पुरस्कार (सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी – विज्ञान संकाय जीवविज्ञान)	श्री कौशल किशोर सहायक प्राध्यापक (वनस्पति विज्ञान)	किरण पटेल बीएससी तृतीय वर्ष (जीवविज्ञान)
7.	स्व. श्री ओंकार प्रसाद शर्मा (गुरूजी) स्मृति पुरस्कार (सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी – विज्ञान संकाय गणित)	श्री शालिकराम शर्मा जनपद पंचायत सदस्य, धरसींवा	रमा मानिकपुरी बीएससी तृतीय वर्ष (गणित)
8.	सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी कला संकाय	डॉ. श्रीमती शबनूर सिद्दीकी प्राध्यापक (इतिहास)	कु. देवकुमारी बी.ए. तृतीय वर्ष
9.	स्व. हाजी मिर्जा फरजन्द बेग (सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी वाणिज्य संकाय)	श्री मिर्जा प्यार बेग सेवानिवृत्त शिक्षक	निरंक (वाणिज्य संकाय वर्तमान सत्र से प्रारंभ होने के कारण)
10.	सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी एम.ए. हिन्दी सहित्य	डॉ. श्रीमती सुलेखा अग्रवाल सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)	कु. दिव्या साहू एम.ए. (हिन्दी सहित्य)
11.	स्व. श्री मंगल प्रसाद जी बंछोर स्मृति पुरस्कार (सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी एम.एससी. गणित)	श्री दिलेन्द्र बंछोर अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति शा. पं. श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय धरसींवा	सागर कुमार एम.एस.सी. (गणित)
12.	स्व. डॉ. आर.पी. चौधरी स्मृति पुरस्कार (सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी एम.ए. राजनीति शास्त्र)	डॉ. श्रीमती संध्या सिंगारे प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र)	मनोज कुमार एम.ए (राजनीति शास्त्र)
13.	श्री रामेश्वर राम महोबिया स्मृति पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	श्री अनिल कुमाार महोबिया क्रीड़ा अधिकारी एवं चयन समिति	रमा धीवर बी.ए. तृतीय वर्ष

Scanned with CamScanner

कविता

"भारत के नौजवानों"

भारत के नौजवानों, भारत को दिव्य बनाना,
तुम्हें प्यार करें जग सारा, तुम ऐसा बन दिखलाना।
भारत के नौजवानों, भारत को दिव्य बनाना,
केवल इच्छा न बढ़ाना, संयम जीवन में लाना,
सादा जीवन तुम जीना, पर ताने रहा सीना।
भारत के नौजवानों, भरत को दिव्य बनाना
जो लिखा है सद्ग्रंथों में, जो कुछ भी कहा संतों ने,
उसको जीवन में लाना, वैसा ही बन दिखलाना।
भारत के नौजवानों, भरत को दिव्य बनाना
सारे जहॉ से अच्छा, हिन्दोस्ता हमारा.....?
हम बुलबुले है इसकी, ये गुलसिता हमारा.....?
सारे जहॉ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा।
तुम पुरूशार्थ तो करना, पर नेक राह पर चलना।
सज्जन का संग ही करना, दुर्जन से बच के रहना।
भारत के नौजवानों, भरत को दिव्य बनाना
जीवन अनमोल मिला है, तुम मौके को मत खोना
यदि भटक गये इस जग में, जन्मों तक पड़ेगा रोना
भारत के नौजवानों, भारत को दिव्य बनाना।

सागर कुमार
एम.एस.सी चतुर्थ सेमेस्टर (गणित)

कहाँ ले मोबाईल आ गे रे

कहाँ ले मोबाईल आ गे रे, चलत गाड़ी मँ बात करय भइया,
चीन्हे नहीं कोनो ददा–भईया, मइनखे देखव बऊरागे रे , कहाँ ले मोबाईल आ गे रे।।

स्कूल कालेज में एखरे कमाल हे, जेती देखव तेती एखर धमाल हे,
मति मइनखे के छरियागे रे, कहाँ ले मोबाईल आ गे रे।।

बर–बिहाव म एखरे धाक हे, एखर बिना पचे नहीं भात हे।
देखके जीव करुवागे रे, कहाँ ले मोबाईल आ गे रे।।

थइली मँ देखव, अब कतको मोबाईल हे, बदले बदले जिनगी के स्टाइल हे,
धरके मइनखे बइहागे रे, कहाँ ले मोबाईल आ गे रे।।

सुबोध दुबे
बी.कॉम.प्रथम

Scanned with CamScanner

एक बार की बात है जब मैं स्कूल जाता था..
लेट उठो जिस दिन, उस दिन पापा से डांट खाता था..

नींद में ब्रश करता हुआ, टॉयलेट में घुस जाता था..
ना जाने कैसे दिन थे वो, टॉयलेट में ही सो जाता था..

एक बार की बात है जब मैं स्कूल जाता था..

स्कूल में एंट्री करते हुए ना जाने कैसा खौफ सताता था..
कब होगी छुट्टी, बस यही सब दिल में आता था..

जैसे-जैसे बड़े हुए, अब स्कूल में दिल लग जाता था..
हर सुंदर लड़की वे ना जाने क्यूं, क्रश हो जाता था..

एक बार की बात है जब मैं स्कूल जाता था..

वो यारो के संग मस्ती, वो लड़कियां थी जब हंसती..
कैंटीन में युही लंच ब्रेक निकल जाता था..

अब ना थे हम नादान, क्योंकि बोर्ड के थे एग्जाम..
हमसे पूछे कोई, वो प्रेसर कैसे झेला जाता था..

एक बार की बात है जब मैं स्कूल जाता था..

स्कूल का वो आखरी दिन और शर्टों में सिग्नेचर किया जाता था..
तब ना थे हम दोस्तों के बिन, जब मैं स्कूल जाता था..

एक बार की बात है जब मैं स्कूल जाता था..
जब मैं स्कूल जाता था..

गोपाल अग्रवाल
(एम.ए. राजनीति विज्ञान)

Scanned with CamScanner

बड़ा भोला सा बड़ा प्यारा सा और तो और बड़ा सच्चा सा लगता है।
तेरे शहर से तो मेरे गाँव अच्छा लगता है।

शहर में मैं अपने मकान नम्बर से जाना जाता हूँ।
गाँव में मैं अपने पापा के नाम से पहचाना जाता हूँ।।

शहर के शोर सराबे में कहीं खो से जाते है।
गाँव में टूटी हुई खाट पर भी बड़े आराम से सो जाते है।।

शहर में चीखो की आवाज दीवारो से टकराती है।
गाँव में दो दीवार पार दूसरो को सिसकारिया भी आराम से सुन ली जाती है।

शहर में कोठी सी बंगला है और कार है।
गाँव में घर है परिवार है और संस्कार है।।

मत समझो हमको कम ओ शहर वालो की हम गाँव से आये है।
तेरे शहर के ये जो रंग बिरंगे बाजार है मेरे गाँव के लोगों ने ही सजाये है।।

अंतिम पंक्ति...

शहर की चाक चौबंध रौशनी तो खूब देखी यारो।
आओ आपको गाँ में असली चाँद की रौशनी दिखाते है।
आपको अपना गाँव दिखाते है, आपको अपना गाँव दिखाते है।।

''मैंने अपना सबसे अच्छा अनुभव इस कविता के माध्यम से बातने का प्रयास मैंने किया है''

गोपाल अग्रवाल
(एम.ए. राजनीति विज्ञान)

Scanned with CamScanner

हम सच्चाई कहते हैं...

झूठ के इस दौर में भी, हम सच्चाई कहते हैं।
इसलिए हर जन की रूसवाई हम सहते है ।।

हम गुमराह लोगों को, सन्मार्ग दिखाते हैं।
इसलिए हमने उनसे, तन्हाई ये पायी हैं ।।

अपने हर हमराही से, हम वफ़ा ही निभाते हैं।
इसलिए हमने उनसे, बेवफाई यह पायी है ।।

जो गलत है उसको, हम गलत ही कहते हैं।
इसलिए वाह-वाही, हमने नही पायी है ।।

कलमुंहे सफेद पोशों को, हम आईना दिखाते हैं।
इसलिए गुमनामी की, ये सजा हमने पायी है ।।

सज्जन समझ जिस-जिस को, हम नमन करते हैं।
लोकेश उसने ही क्यों, अपनी औकात बतायी है ।।

लोकेश कुमार सेन
(एम.ए. राजनीति विज्ञान)

Scanned with CamScanner

बेटी है तो, है सृष्टि सारी

कभी बेटी, कभी बहन, कभी पत्नी, तो कभी माँ है नारी,
पुरूष जिसके बिना असहाय है, ऐसी है नारी
कभी ममता की फुलवारी, तो कभी राखी की क्यारी है नारी,
सृष्टि जिसके बिना थम जाए, ऐसी है नारी,
पुरूषों की पूरी भीड़ पर, अकेली भारी है नारी,
जो सृश्टि को जलाकर राख कर दे, ऐसी चिंगारी है नारी,
बेटी हो तो – पिता की राजदुलारी है नारी,
माँ हो तो – सन्तान पर हमेशा भारी है नारी,
बहन हो तो – भाई की लाडली है नारी,
पत्नी हो तो – पति की जान है नारी,
पुरूष हमेशा अधूरा तो – हमेशा पूरी है नारी,
सृष्टि जिस पर घूम रही, वह धुरी है नारी,
जब गर्भ में नहीं मारोगे, तभी तो तुम्हारी है नारी,
जब नारी है – तभी तो है ये सृष्टि सारी ।।

नाम– शिल्पा साहू
कक्षा – एम.ए. प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)

माँ

लेती नहीं दवाई माँ,
जोड़े पाई–पाई माँ।
दुःख थे पर्वत राई माँ,
हारी नहीं लड़ाई माँ।
इस दुनियां में सब मैले हैं,
किस दुनियां से आई माँ।
दुनियां के सब रिश्ते ठण्डे,
गरमागरम रजाई माँ।
जब भी कोई रिश्ता उधड़े,
करती है तुरपाई माँ।
घर में चूल्हे मत बांटो रे,
देती रही दुहाई माँ।
रोती है लेकिन छुप–छुप कर,
बड़े सब्र की जाई माँ।

लड़ते–लड़ते सहते सहते,
रह गई एक तिहाई माँ।

बेटी रही ससुराल में खश,
सब जेवर दे आई माँ।
माँ से घर–घर लगता है,
घर में घुली समाई माँ।
बेटे की कुर्सी है ऊँची,
पर उसकी ऊँचाई माँ।
दर्द बड़ा हो या छोटा हो,
याद हमेशा आई माँ।
घर के शगुन सभी माँ से हैं,
है घर की शहनाई माँ।
सभी पराये हो जाते हैं,
होती नहीं पराई माँ।।

कु. नंदनी साहू
बी.ए. तृतीय

Scanned with CamScanner

माँ : एक वरदान

मोम से भी अत्यंत कोमल होती है माँ,
पिघला दो तो पानी से भी ज्यादा द्रवशील होती है माँ,
पाशाण पत्थर से भी प्रकट हो जाती है माँ
बस श्रध्दा पूर्वक कह – हे माँ,
ममता की मिसाल ओर विशाल मूरत होती है माँ,
सच्चे हृदय से पुकार लो तो आ जाती है माँ,
बस श्रध्दा की भूखी होती है माँ,
अपने संतानो को सदैव संकटों से बचाती है माँ,
विपत्ति काल में भी केवल याद आती है माँ,
पर अपेक्षा की भी पात्र नहीं है माँ,
इस हेतु संसार में सर्वोच्च स्थान रखती है एक मात्र माँ।।

कु. भेनेश्वरी निषाद
बी.ए.तृतीय

चलते रहो

सफर में धूप तो होगी, जो चल सको तो चलो,
सभी हैं भीड़ में, तुम भी निकल सको तो ।।..... चलो.....।।
किसी के वास्ते, राहें कहाँ बदलती है,
तुम अपने आप को खुद ही बदल सको तो ।।..... चलो.....।।
यहां किसी को, कोई रास्ता नहीं देता,
मुझे गिराके, तुम संभल सको तो ।।..... चलो.....।।
यही है जिंदगी, कुछ ख्वाब चंद उम्मीदें,
इन खिलौनों से तुम भी बहल सको तो ।।..... चलो.....।।
सफर में धूप तो होगी, जो चल सको तो चलो,
सभी हैं भीड़ में, तुम भी निकल सको तो ।।..... चलो.....।।

शाहिना परवीन
बी.ए.तृतीय

Scanned with CamScanner

बस एक कदम और

बस एक कदम और, इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और, इस बार इशारा होगा।।
अन्धेरे के नीचे उस बदली के पीछे, कोई तो किरण होगी।
इस अंधकार से लड़ने को, कोई तो किरण होगी।।
बस एक पहर और, इस बार उजाला होगा।
बस एक कदम और, इस बार किनारा होगा।।
जो लक्ष्य को भेदे, वो कहीं तो तीर होगा।
इस तपती भूमि में, कहीं तो नीर होगा।।
बस एक प्रयास और, अब लक्ष्य हमारा होगा।
बस एक कदम और, इस बार किनारा होगा।।
जो मंजिल तक पहुँचे, वो कोई तो राह होगी।
अपने मन को टटोले, कोई तो चाह होगी।।
जो मंजिल तक पहुँचे, वो कदम हमारा होगा
बस एक कदम और, इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और, इस बार इशारा होगा।।

शाहिना परवीन
बी.ए.तृतीय

सर्व शक्तिमान तिरंगा

तीन रंगों से बना तिरंगा, सदा शक्ति बरसाता है।
देखो भारत की चोटी पर, शान से लहराता है।
केसरिया रंग को देखो,जो त्याग हमें सिखलाता है।
जब भी संकट आए मर मिटने को बताया है।
सादा जीवन उच्च विचार सफेद रंग बतलाता है।
सत्य, अहिंसा, भाईचारा का पाठ हमें सिखलाता है।
हरे रंग की है अपनी कहानी मन हर्षित हो जाता है।
हरे–भरे प्रकृति को देखो, सबके मन को भाता है।
बीच में देखो अशोक चक्र को, जो हरदम चलते रहता है।
रूको नहीं तुम आगे बढ़ो, हर पल हमसे कहता है।

कृष्ण साहू
बी. ए. द्वितीय

Scanned with CamScanner

बेटी बचाओ

बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है
बेटा वंश है, तो बेटी अंश है
बेटा शान है, तो बेटी गुमान है
बेटा संस्कार है,तो बेटी संस्कृति है
बेटा तन है,तो बेटी मन है
बेटा प्रेम है, तो बेटी पूजा है
बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है
बेटा गीत है, तो बेटी राग है
बेटा फूल है, तो बेटी खुशबू है
बेटा लाठी है, तो बेटी डोरी है
जब माँ चाहिये, बहन चाहिये, पत्नी चाहिये तो बेटी क्यो नहीं चाहिये!

कु. भारती निषाद
बी.कॉम.प्रथम

गुरू महिमा

जहाँ पर देव दर्शन हों,वहाँ भवपार होता है।
जहा मुनियों की वाणी हो, वही उद्धार होता है।। 2 ।।
मुझे लगता नहीं नवकार से ऊँचा यहाँ कोई।। 2।।
वहाँ सब पाप कट जाते, जहाँ नवकार होता है।।

न हो फूलों की कीमत तो, कहीं उपवन नहीं मिलते।। 2 ।।
जो मन ही हो मरुस्थल तो, कहीं सावन नहीं मिलते
कि जिसके दिल में ईश्वर की, कहीं मूरत नहीं कोई ।। 2 ।।
उसे पत्थर ही दिखते हैं, कभी दर्शन नहीं मिलते।।

भटकना जिनकी आदत है, कभी वो घर नहीं पाते।
कि गूंगे की तरह में, कभी वो स्वर नहीं पाते।
लिखा इतिहास में, भगवान से बढ़कर गुरु होते।। 2 ।।
गुरु निंदा जो करते हैं, कभी वो तर नहीं पाते।। 2 ।।

हिकेश कुमार साहू
एन.एस.एस. छात्र

Scanned with CamScanner

छत्तीसगढ़ी छटा

मोर धरती मैया के महिमा हे अपरम्पार

मोर धरती मैया के महिमा हे अपरम्पार
सोना–चाँदी हीरा–मोती भरे हवय भण्डार
इही म उपजे चना बटुरा, गेहूँ औ धान।
इही म सरसों अव धनिया उपजाथे ग किसान .....
मोर धरती मैया के महिमा हे अपरम्पार

रूख,राई, झाड़ झडौका हे येखर श्रृंगार संगी .....
येला काटके के तुमन संगीख झन करव अपराध .....
मोर धरती मैया के महिमा हे अपम्पार .....

पठार पर्वत अव मैदान, धरती दाई के कोरा संगी
धरती दाई के कोरा
झील नदियाँ औ सागर ह धरती दाई के डोरा संगी
धरती दाई के डोरा
जेला रात में चंदा, दिन में सूरज, करथे ग अंजोरा संगी
करथे ग अंजोरा ।

मोर धरती दाई के महिमा हे अपरम्पार .....

इही ह हमला अन्न देवइया, इही ह हमला
धन देवइया
इही म हमन जनम लेवइया, इही ह हमन करम लिखइया
मोर धरती मैया के महिमा हे अपरम्पार .....
सोना–चाँदी हीरा मोती भरे हवय भण्डार
मोर धरती दाई के महिमा हे अपरम्पार .....

डॉ. सुलेखा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
हिन्दी विभागाध्यक्ष

Scanned with CamScanner

छत्तीसगढ़ी गीत

"मोर जतन करव रे! मैं धरती के श्रृंगार अंव"

मोर जतन करव रे ..... मैं धरती के श्रृंगार अंव।
मोला समझंव तूमन ह रे, तूहर जिनगी के मैंहां अधार अंव।
मैं धरती के श्रृंगार अंव .....
देखलव मोला शहर अवं गांव, रद्दा चलईया देथवं छांव
किसान बर मैं नागर अंव, अव नाविक बर नांव अव
मैं धरती के श्रृंगार अंव .....
उड़त बादर ल मैं लाथंव अंव पानी ल बरसाथव
जेमा अन्न ल उपजांथव, अपन मन ल हरसाथव
तूहर जिनगी के मैंहा अधार अंव
मैं धरती के श्रृंगार अंव .....
मोलाझन तूमन ह काटव, अपन बेटी– बेटा जानव
दरद पीरा महुँल होथे ग – मैं काला गोहरांवव .....
मैं धरती के श्रृंगार अंव, मैं धरती के श्रृंगार अंव
पंथी बर बसेरा अंव, जीव जन्तु के डेरा अंव,
दिनों दिन मोला काटत हे, तूँहला बिनती है मोला बचालव .....
मैं धरती के श्रृंगार अंव, मैं धरती के श्रृंगार अंव
तूहर जीनगी के मैंहा अधार अंव.....
एक दिन पानी गिरता बन्द हो जाही
खेती–खार बंजर हो जाही ,
धरती ह धुर्रा हो जाही, जिनगी ह दुभर हो जाही
मानलंव मोरे बात ल, मान लंव मोरे बात .....
मोर जतन करव रे ..... मैं धरती के श्रृंगार अंव।
मोला समझंव तूमंन ह रे, तूहर जिनगी के मैहा अधार अंव
मैं धरती के श्रृंगार अंव।

श्री रणजीत सिंह
अतिथि व्याख्याता, हिन्दी विभाग

Scanned with CamScanner

प्रेरणात्मक विचार

- सितारों को न छू पाना, लज्जा की बात नहीं,
  लज्जा की बात है, मन में सितारों को छूने का हौसला न हो पाना।।
- मन स्वच्छ है, तो विचार भी स्वच्छ होंगे।।
- सोचना विकास है, न सोचना विनाश है।।
- प्रतिदिन एक घंटा पुस्तके पढ़ने में लगाइये, आप स्वयं ज्ञान के भण्डार हो जाएँगे।।
- सफलता तभी सम्भव है, जब हम कर्तव्य के प्रति समर्पित होंगे।
- बड़े से बड़े कम्प्यूटर से भी अधिक, तेज है मनुष्य का मस्तिस्क।
- एक अच्छी पुस्तक, आपके जीवन को उज्जवल करती है।

ददा ए हमर देश के

पोरबंदर में अवतरिस, पुतली अऊ करम के बेटा,
आघु चलके संसार म नाम कमाइस,
कोन ए, ददा ए हमर देश के।
विलायत गइस, वकालत पढ़िस,
फेर लबारी ल सिरतोन नई कहिस,
कोन ए, ददा ए हमर देश के।
परदेशी ओढना के होले जलवाइस, देशी जिनिस ल बउरे सिखाइस,
नई मानिस त, बिन मार काट के देश ले भगाईस,
कोन ए, ददा ए हमर देश के।
अंग्रेज सरकार हर करिया कानून बनाइस त,
संग नइ दे के, अघुवाई करिस
कोन ए, ददा ए हमर देश के।
हाथ म धरय लउठी, आँखी म पहिनय चश्मा,
माड़ी भर ले धोती पहिनय,
कोन ए, ददा ए हमर देश के।
पूजा करे बर मंदिर जात रहिस,
जान मार के गोली खाइस,
मुँह ले हे राम निकलिस,
कोन ए, ददा ए हमर देश के।।

कु. नेहा परगनिहा
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (राजनीति शास्त्र)

Scanned with CamScanner

सरग ले बड़ सुन्दर भुईंया, मोर छत्तीसगढ़ के कोरा ।
दुनिया भर ऐला कहिथे, भैइया धान के कटोरा ।।

मैं कहिथंव ये मोर महतारी ऐ
बड़ मयारू बड़ दुलौरिन
मोर बिपत के संगवारी ऐ
सहूंहे दाई कस पालय पोसय
जेखर मैं तो सरवन कस छोरा
संझा बिहनिया माथा नवांव ऐही देवी देवता मोरे
दानी हे बर दानी हे, दाई के अचरा के छोरे ।।
मोर छत्तीसगढ़ी भाखा बोली
मन के बोली हिरदय के भाखा
हर बात म हसी ठिठोली
घुरे जइसे सक्कर के बोरा
कोइला अऊ हीरा ला, दाई ढाके हे अपन अचरा
बनकट्ठी दवई अड़बड़, ऐखर गोदी कांदी कचररा
अन्नपूर्णा के मूरत ये हा
धन धान्य बरसावय
श्रमवीर के माता जे हा
लइकामन ल सिरजावय
फिरे ओ तो कछोरा
सरग ले बड़ सुंदर भुईंया, मोर छत्तीसगढ़ के कोरा ।
दुनिया भर ऐला कहिथे, भैइया धान के कटोरा ।।

लोकेश कुमार सेन
(एम.ए. राजनीति विज्ञान)

Scanned with CamScanner

ज्ञानवर्धक बातें

बाइबल के नीतिवचन

- मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं,
  और जो उतावली से दौड़ता है, वह चूक जाता है।

- जो शिक्षा पाने से प्रीति रखता है, वह ज्ञान से प्रीति रखता है,
  परन्तु जो डाँट से बैर रखता है, वह पशु सरीखा है।

- जो शिक्षा को सुनी–अनसुनी करता है, वह निर्धन होता और अपमान पाता है,
  परन्तु जो डाँट को मानता है, उसकी महिमा होती है।

- बुद्वि श्रेष्ठ है, इसलिए उसकी प्राप्ति के लिए यत्न कर,
  उसकी बड़ाई कर, तब वह तुझको बढ़ाएगी।

- जो सत्य में दृढ़ रहता, वह जीवन पाता है,
  परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह मृत्यु का कौर हो जाता है।

- सज्जन अपनी बातों के कारण, उत्तम वस्तु खाने पाता है,
  परन्तु विश्वासघाती, लोगों का पेट उपद्रव से भरता है।

- निर्धन के पास धन नहीं रहता, परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता है, उसकी बढ़त होती है।

- जहाँ बहुत बातें होती है वहाँ अपराध भी होता है,
  परन्तु जो अपने मुँह को बन्द रखता वह बुद्वि से काम करता है ।

- मूर्ख को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है,
  परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्विमान है।
  मूर्ख की रिस उसी दिन प्रकट हो जाती है,
  परन्तु चतुर अपमान को छिपा रखता है।

- जो अपने मुँह की चौकसी करता है,
  वह अपने प्राण की रक्षा करता है,
  परन्तु जो गाल बजाता है उसका विनाश हो जाता है।

- जो संभलकर बोलता है, वह ज्ञानी ठहरता है,
  और जिसकी आत्मा शांत रहती है,
  वही समझवाला पुरूष ठहरता है।

- नाश होने से पहले मनुष्य के मन में घमण्ड,
  और महिमा पाने से पहले नम्रता होती है।

डॉ. रश्मि कुजूर
सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

Scanned with CamScanner

आलेख / Articles

छत्तीसगढ़ शासन के प्रमुख सम्मान / पुरस्कार

fi[\b c\^i _^/"_Z [U` 9/ i V 10 दिसम्बर 1857 को इन्हें फांसी दी गई। अन्याय के खिलाफ सतत संघर्ष करने, चेतना जगाने, ग्रामीणों को उनके भौतिक अधिकारों के प्रति जागृति उत्पन्न करने हेतु यह पुरस्कार दिया जाता है।

/Z /fi mm` 9/ i V हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए महत्वपूर्ण प्रयास स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रणेता अनेक बार जेल गए। अहिंसा और गौरक्षा के क्षेत्र में पुरस्कार दिया जाता है।

I ëA #ê` 9/ i V जनजातीय क्षेत्र के क्रांतिवीरों में गुण्डाधुर का नाम श्रेश्ठ है। अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ अदम्य शौर्य और रणनीति , छापामार युध्द के जानकार देशभक्त की स्मृति में साहसिक कार्य और खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु यह पुरस्कार दिया जाता है।

Z/i \Y f_` 9/ i V अपने समाज की गरीबी, अशिक्षा, पिछड़ापन दूर करने को समर्पित 1952 से 72 तक महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयासरत। मलिआ उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु यह पुरस्कार दिया जाता है।

I e 3_` \b_` ` 9/ i V सतनाम उपदेश, सतनाम सिद्धांत , के प्रवर्तक सत्य अहिंसा सामाजिक चेतना और न्याय के क्षेत्र में यह पुरस्कार दिया जाता है।

6 Xê ≠_^gnm` 9/ i V श्रमिक आन्दोलन के प्रमुख, मिल मजदूरों के शोषण के विरुद्ध जागरूक सहकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर यह पुरस्कार दिया जाता है।

[_h\[` i j m\` 9/ i V उर्दू की सेवा के लिए अनेक पुरस्कारो से सम्मानित, उर्दू अदब को प्रोत्साहन देने का कार्य किया। उर्दू भाषा की सेवा के लिए यह पुरस्कार दिया गया।

Y[_^h_µc\^dl Yb bg` 9/ i V आदिवासी हितों की रक्षा संगठन और अधिकारी की रक्षा इस यशस्वी सपूत ने की तीरंदाजी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर यह सम्मान दिया जाता है।

]U^Zcfi X ^fi em` 9/ i V भारत छोड़ो आन्दोलन के नेतृत्वकर्ता तथा भिलाई स्पात संयंत्र की स्थापना संस्कृत, आयुस विज्ञान, इंजिचरिग महाविद्यालयों के प्रेरक। महाकौशल पत्र के प्रकाशक सामा आर्थिक शैक्षिक क्षेत्र के प्रयत्नों के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है।

]U` ëb^ mm fiY N 9/ i V लगभग 18 ग्रंथो के रचनाकार 1920 में कण्डेल नहर सत्याग्रह के नेतृत्वकर्ता और छत्तीसगढ़ के गांधी। साहित्यिक गतिविधियों से संबंधित पुरस्कार दिया जाता है।

b_" Yb^_h\` 9/ i V नाचा के माध्यम से भारतीय लोक संस्कृति को परवान चढ़ाने वाले दाऊ मंदरा जी सम्मान लोककला के संवर्धन के लिए दिया जाता है।

AÑ O k d I b W 3 gn` 9/ i V 1930 में नमक सत्याग्रह में शामिल। 1940 में तीसरी बार जेल 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन से राष्ट्रीय चेतना का अलख जगाया कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि पर यह पुरस्कार दिया जाता है।

S. Siddiqui

डॉ. श्रीमती शबनूर सिद्दीकी
प्राध्यापक – इतिहास

Scanned with CamScanner

भारत में लोकसाहित्य

किसी भी देश के वाड्मय में लोक साहित्य का प्रधान स्थान होता है। लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीत, लोक गाथा, लोक कला, लोक नाट्य और लोक सुभाषित समाहित किया गया है। साथ ही साथ इसमें लोकोक्ति, मुहावरा, पहेली और सूक्तियो का भी अंतर्भाव पाया जाता है।

प्राचीन भारत में लोक साहित्य की परम्परा प्रचुर परिमाण में पायी जाती है। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, महाकाव्यों तथा नाटकों के अध्ययन से पता चलता है कि अतीत युग में भी लोक साहित्य की सत्ता विद्यमान थी। लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं, लोक गीत, लोक कथाओं की चर्चा अनेक स्थानों पर पायी जाती है। भारत लोककथा के क्षेत्र में तो सबसे समृद्ध माना जाता है। यहाँ के कथा साहित्य ने संसार की प्राचीनतम कथाओं 'इसापस फेबुल्स' आदि को भी प्रभावित किया है। पंचतंत्र की विभिन्न कथाओं ने इस प्रकार अन्य देशों के कथा साहित्य पर अपना प्रभाव डाला है। इसकी कथा बड़ी रोचक है। पंचतंत्र की विजय यात्रा लोक साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान रखती है। यह यात्रा ऐतिहासिक होने के साथ ही गौरवशालिनी भी है। संस्कृत भाषा में भी लोकोकितयों, पहेलियो तथा मुहावरो का प्रचुर भण्डार दिखलाई पड़ता है। एक जर्मन विद्वान ने संस्कृत साहित्य में उपलब्ध लोकोक्तियों का संकलन अत्यंत परिश्रम से करके उन्हें अनेक भागों में प्रकाशित किया है। पहेली जिसे संस्कृत में प्रहेलिका कहा जाता है, के बीज तो ऋग्वेद में ही उपलब्ध होते है। अंतरलिपिका तथा बहिर्लिपिका के भेद से पहेलिया के अनेक भेद पाये जाते है। संस्कृत साहित्य में मुहावरे भी उपलब्ध होते है।

प्राचीन भारत में संस्कृत, पाली प्राकृत आदि भाषाओं में लोक साहित्य संबंधी सामग्री विपुल परिमाण में उपलब्ध होती है, जिसमें लोकगीत और लोकगाथा की रचना परम्परा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। हमारे सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में लोकगीतों तथा गाथाओं का उल्लेख पाया जाता है। पद्य या गीत के अर्थ में गाथा शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर पाया जाता है जैसे –

''प्रकृतान्यृजीषिणः''।

कण्वा इन्द्रस्य गाथया।

मदे सोमस्य वोचन।।

ऋग्वेद के अलावा ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रंथों में गाथाओं का विशेष महत्व है। महाभारत काल में ऐतिहासिक गाथाओं की परम्परा विशेष रूप से दिखलाई पड़ती है।

लोक साहित्य के एक महत्वपूर्ण प्रकार के रूप में लोककथा का साहित्य में विपुल रूप में प्राप्त होता है। इसने भारतीय साहित्य पर ही अपनी छाप नहीं डाली है, प्रत्युत पश्चिम देशों के कथासाहित्य पर भी अपना व्यापक प्रभाव डाल

Scanned with CamScanner

रखा है। भारत वर्ष के तीनों वैदिक, जैन तथा बौद्ध धार्मिक सम्प्रदायों ने अपने सिद्धांतों के विशद् प्रचार तथा प्रसार के लिए कथाओं तथा आरण्यानों का प्रयोग किया है। ऋग्वेद तथा 'संवाद सूक्त' अनेक महत्वपूर्ण कथाओं के लिए प्रख्यात है। सामान्य तौर पर लोक कथा के दो स्वरूप दिखलाई पड़ता है :- 1. वृहत् तथा 2. पंचतंत्र। इसमें वृहत् कथा प्राचीनतर है। यह पैशाची भाषा में लिखी गई है एवं पंचतंत्र कथा संस्कृत भाषा में प्राचीन काल में दिखलाई पड़ता है।

प्राचीन काल में लोक साहित्य का एक प्राचीन स्वरूप पहेली भी है, जिससे संस्कृत में प्रहेलिका कहा गया है तथा इसका बीज हमें ऋग्वेद में प्राप्त होता है। पहेली का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

''सूर्यः एकाकी चरति, चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्नि हिमस्य भेषजः, भूमिरावपनं महत्।।''

ऐसी पहेलियां मन को चमत्कृत कर देती है। इसके अतिरिक्त लोकसाहित्य के अंतर्गत प्राचीन काल में लोकोक्तियां, मुहावरे इत्यादि भी सजीव एवं सरस रूप में दिखलाई पड़ते है।

प्राचीन काल से मध्यकाल, मध्यकाल से आधुनिक काल तक आते-आते लोकसाहित्य की रचना में क्रमशः वृद्धि दिखलाई पड़ती है तथा भारत के सभी प्रांतों में लोक साहित्य का स्वरूप दिखलाई पड़ता है। चाहे वह हिमाचल प्रदेश हो चाहे पंजाब चाहे जम्मू कश्मीर हो, चाहे राजस्थान, आधुनिक समय में भारत में छत्तीसगढ़ राज्य लोक साहित्य की दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध दिखलाई पड़ता है। जहाँ पर लोकगीत, लोक कथा गाथा का प्रचुर भंडार दिखाई पड़ता है। लोकगीतों में पंथीगीत, करमा गीत एवं नृत्य, सुआ गीत, विवाह गीत, राउत नाचा के गीत तथा लोकगाथा में रेवा रानी, अहिमन रानी, केवल रानी की कथा, लोरिक चंदा, पंडवानी, ढोला मारू कथा प्रसिद्ध है। इसके अलावा हरबोलवा परंपरा भी छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का महत्वपूर्ण अंश है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि आदिकाल से श्रुति एवं स्मृति के सहारे जीवित रहने वाले लोक साहित्य के कुछ विशेष सिद्धांत है। इस साहित्य में मुख्य रूप से वे रचनाएँ ही स्वीकार की जाती है अथवा जीवन पाती है जो अनेक कंठों से अनेक रूपों में बनकर बिगड़कर एक सर्वमान्य रूप धारण कर लेती है। यह रचनाक्रम आदिकाल से अब तक जारी है और इसी लोक साहित्य के स्वरूप लोकगीत, लोकगाथा आदि के कारण भारत की छवि देश विदेश में अत्यंत उज्ज्वल दिखालाई पड़ती है। अनुमान है कि भविष्य में भारत के हर प्रांत में हर छोटे-छोटे गाँव के लोक साहित्य में प्रचुर रचना होगी।

डॉ. सुलेखा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शास. पं. श्यामाचरण शुक्ल
महाविद्यालय, धरसींवा

Scanned with CamScanner

कोदूराम दलित का जीवन परिचय

परिचय

कवि कोदूराम 'दलित' का जन्म 5 मार्च 1910 को ग्राम टिकरी (अर्जुन्दा), जिला-दुर्ग में हुआ। आपके पिता श्री राम भरोसा कृषक थे। उनका बचपन ग्रामीण परिवेश में खेतिहर मजदूरों के बीच बीता। उन्होंने मिडिल स्कूल अर्जुन्दा में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात नार्मल स्कूल, रायपुर, नार्मल स्कूल, बिलासपुर में शिक्षा ग्रहण की। स्काउटिंग, चित्रकला तथा साहित्य विशारद में वे सदा आगे-आगे रहें। वे 1931 से 1967 तक आर्य कन्या गुरूकुल, नगर पालिका परिषद् तथा शिक्षा विभाग, दुर्ग की प्राथमिक शालाओं में अध्यापक और प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत रहे।

ग्राम अर्जुन्दा में आशु कवि श्री पीला लाल चिनोरिया जी इन्हे काव्य-प्रेरणा मिली। फिर वर्ष 1926 में इन्होंने कविताएँ लिखनी शुरू कर दीं इनकी रचनाएँ लगातार छत्तीसगढ़ के समाचार-पत्रों एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। इनके पहले काव्य-संग्रह का नाम है - 'सियानी गोठ' (1967), फिर दूसरा संग्रह है - 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' (2000)। भोपाल, इंदौर, नागपुर, रायपुर आदि आकाशवाणी-केन्द्रों से इनकी कविताओं तथा लोक-कथाओं का प्रसारण अक्सर होता रहा है। मध्य प्रदेश शासन, सूचना-प्रसारण विभाग, म.प्र. हिन्दी साहित्य अधिवेशन, विभिन्न साहित्यिक सम्मेलन, स्कूल-कॉलेज के स्नेह सम्मेलन, किसान मेला, राष्ट्रीय पर्व तथा गणेशोत्सव में इन्होंनेकई बार काव्य-पाठ किया। सिंहस्य मेला (कुम्भ), उज्जैन में भारत शासन द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में महाकौशल क्षेत्र से कवि के रूप में भी आपको आमंत्रित किया जाता था। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के नगर आगमन पर भी ये अपना काव्यपाठ करते थे।

आप राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्दा की दुर्ग ईकाई के सक्रिय सदस्य रहे। दुर्ग जिला साहित्य समिति के उपमंत्री, छत्तीसगढ़ साहित्य के उपमंत्री, दुर्ग जिला हरिजन सेवक संघ के मंत्री, भारत सेवक समाज के सदस्य, सहकारी बैंक दुर्ग के एक डायरेक्टर, म्यु.कर्मचारी सभा नं. 467, सहकारी बैंक के सरपंच, दुर्ग नगर प्राथमिक शिक्षक संघ के कार्यकारिणी सदस्य, शिक्षक नगर समिति के सदस्य जैसे विभिन्न पदों पर सक्रिय रहते हुए अपने-अपने बह आयामी व्यक्तित्व से राष्ट्र एवं समाज के उत्थान के लिए सदैव कार्य किया है।

पंडित सुन्दर लाल शर्मा के साहित्य के पश्चात् छत्तीसगढ़ी को अपनी सुगढ़ लेखनी से समृद्ध करने वाले दो कवि प्रमुख है :- पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' तथा कोदूराम 'दलित' विप्र जी को भाग्यवश प्रचार और प्रसार दोनों प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुए, दुर्भाग्यवश उन्हीं के समकालीन और सशक्त लेखनी के धनी कोदूराम जी को न तो प्रतिभा के अनुकूल ख्याति मिली और न ही प्रकाशन की सुविधा में लगे रहते थे। साहित्यिक साधना में वे इतने लीन हो जाते थे की खाना, पीना और सोना तक भूल जाते थे, इसके बावजूत वे वर्षों दुर्ग जिला में हिन्दी साहित्य समिति, प्राथमिक शाला

Scanned with CamScanner

शिक्षक संघ, हरिजन सेवक तथा सहकारी साख समिति के मंत्री पद पर अत्यंत योग्यता के साथ कर्तव्यरत् रहे। दलित जी विचारधारा के पक्के गाँधीवादी तथा राष्ट्रभक्त थे, राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए वे सदैव चिंतित रहते थे और गाँधी टोपी लगाते थे। उनका रहन-सहन अत्यंत सदा और सरल था। सादगी में उनका व्यक्तित्व और भी निखर उठता था। दलित जी अत्यंत और सरल हृदय के व्यक्ति थे, पुरानी पीढ़ी के होकर भी नयी पीढ़ी के साथ सहज ही घुल-मिल जाते थे। मुझ जैसे एकदम नए साहित्यकारों के लिए उनके हृदय में अपर स्नेह था।

दलित जी मूलतः हास्य व्यंग्य के कवि थे किन्तु उन्हें व्यक्तित्व में बड़ी गंभीरता और गरिमा थी. कवि-सम्मेलनों में वे मंच लूट लेते थे. उस समय छत्तीसगढ़ी में क्या, हिन्दी में भी शिष्ट हास्य-व्यंग्य लिखने वाले उँगलियों में गिने जा सकते थे. वे सीधी-सादे ढंग से काव्य पाठ करते थे फिर भी श्रोता हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे और दलित जी गंभीर बने बैठे रहते थे. उनकी यह अदा भी देखने लायक ही रहती थी. देखने में वे ठेठ देहाती लगते और काव्य पाठ भी ठेठ देहाती लहजे में करते थे. छत्तीसगढ़ी भाषा और उच्चारण पर उनका अद्भुत अधिकार था. हिन्दी के छंदों पर भी उनका अच्छा अधिकार था. वे छत्तीसगढ़ी कवितायें हिन्दी के छंद में लिखते थे जो सरल कार्य नही है. दलित जी मूलतः छत्तीसगढ़ी के कवि थे.

वह तो आजादी के घोर संगर्ष का दिन था. अतः विचारों को गरीब जनता तक पहुँचाने के लिए छत्तीसगढ़ी में अच्छा माध्यम और क्या हो सकता था. दलित जी ने गद्य और पद्य दोनों में समान गति और समान अधिकार से लिखा. उन्होने कुल 13 पुस्तकें लिखी है :- (1) सियानी गोठ (2) हमर देश (3) कनवा समधी (4) दू-मितान (5) प्रकृति वर्णन (6) बाल-कविता ये सभी पद्य में है. गद्य में उन्होंने जो पुस्तकें लिखी है वे है :- (7) अलहन (8) कथा-कहानी (9) प्रहसन (10) छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ (11) बाल-निबंध (12) छत्तीसगढ़ी शब्द-भंडार, उनकी तेरहवीं पुस्तक कृष्ण-जन्म हिंदी पद्य में है. इतनी पुस्तकें लिख कर भी उनकी एक ही पुस्तक ''सियानी-गोठ'' प्रकाशित हो सकी। यह कितने दुर्भाग्य की बात है. दलित जी की अन्य पुस्तकें आज भी अप्रकाशित पड़ी हैं और हम उनके महत्वपूर्ण साहित्य से वंचित है. ''सियानी-गोठ'' में दलित जी की 76 हास्य-व्यंग्य की कुण्डलियाँ संकलित है. हास्य-व्यंग्य के साथ दलित जी ने गंभीर रचनाएँ भी की है जो गिरधर कविराय की टक्कर की है।

दलित जी ने सन् 1926 से लिखना आरंभ किया. उन्होंने लगभग 800 कवितायें लिखी. जिनमें कुछ कवितायें तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई और कुछ कविताओं का प्रसारण आकाशवाणी से हुआ. आज छत्तीसगढ़ी में लिखने वाले निष्ठावान साहित्यकारों की पूरी पीढ़ी सामने आ चुकी है, किन्तु इस वट-वृक्ष को अपने लहू-पसीने से सींचने वाले, खाद बनकर उनकी जड़ों में समा जाने वाले साहित्यकारों को हम न भूलें।

रूखमणी देवांगन
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

Scanned with CamScanner

छत्तीसगढ़ी साहित्य की विकास यात्रा

संत कबीर के शिष्य संत धर्मदास की रचनाएँ हमें लिपिबद्ध छत्तीसगढ़ी कविता के रूप में प्रथमतः मिली है. इससे पूर्व किसी प्रभावी छत्तीसगढ़ी कवि को ऐसी जनस्वीकृति नहीं मिली. छिटपुट शिलालेखों में छत्तीसगढ़ी के प्रयोग उदाहरणार्थ मिलते है. मगर विधिवत काव्य ग्रन्थों का प्रणयन धर्मदास ने ही किया. न केवल कबीर पंथी जगत में इनकी रचनाएँ पूजित हुई, बल्कि आम जन में भी धर्मदास की रचनाएँ स्वीकृत हुई. श्रुति परम्परा ने धर्मदास की रचनाओं का अभिरक्षण किया लिपिबद्ध होकर ये रचनाएं पीढ़ियें के रूप में हमें परम्परा से जोड़ रही है।

धर्मदास के पूर्व छत्तीसगढ़ के गाथाओं का मायावी संसार भी बेहद समृद्ध रहा है. इन गाथाओं में प्रेम प्रधान तो था ही धार्मिक और पौराणिक गाथाओं की समृद्ध श्रृंखला भी थी. नायक–नायिका के इर्द–गिर्द घूमती प्रेम गाथाओं में उस दौर का धड़कता हुआ सामाजिक जीवन चित्रित है. साथ ही सामंतशाही के दौर में वर्जनाओं की गहरी खाई से बचकर निकल जाने में सफल नायिका और नायक के इर्द–गिर्द घूमती गाथायें सरल सहज छत्तीसगढ़ी जीवन की व्याख्या भी प्रस्तुत करती है.

केवला रानी, अहिमन रानी, रेवा रानी की कथायें, बांस गीतों में आजी भी कही सुनी जाती है।

धार्मिक आख्यानों में रामकथा तथा पाण्डवों की कथा पर आधारित लोकगाथाओं का विविध रूप देखते ही बनता है. इन गाथाओं में जो क्षेपक कथाये आती है, उनका छत्तीसगढ़ी रंग मुग्धकारी होता है. रामायण या महाभारत की कथा का छत्तीसगढ़ीकरण अंचल की कल्पनाशीलता को प्रमाणित करता है. अपने संदर्भो से जुड़ती हुई कथायें कथा की सर्वमान्य मुध्यधारा में जाकर ठीक उसी तरह मिल जाती है. जिस तरह गंगा में छोटी–छोटी नदियां मिलती है.

यहाँ यह उल्लेख भी जरूरी है कि छत्तीसगढ़ी में गाथाओं का अभिरक्षण जातियों से जुड़कर पनपी कलाओं ने किया है.

पंडवानी की रामकथा किसी विशेष जाति की संपदा नहीं है.

भक्ति से जुड़ी रचनाएं स्वाभाविक रूप से छत्तीसगढ़ में भी उत्तर भारत के विद्वानों के प्रभाव से उत्तरोत्तर समृद्ध हुई. छत्तीसगढ़ में उत्तर भारतीय विद्वानों का आवाहगमन रहा है. उन्हीं में से कुछ यहाँ भी बस गये. अपनी काव्य सृजन की दक्षता का लोहा मनवा चुके कवि अवधि एवं ब्रज में ही यहां रहकर पारम्परिक छन्दों का सृजन करते रहे. लेकिन छत्तीसगढ़ में रच बस जाने के बाद इन्हीं कवि व्यक्तियों की नई पीढ़ी ने छत्तीसगढ़ी को काव्य साधना का माध्यम बनाया.

Scanned with CamScanner

इसी तरह धर्मदास के वंशज भी बांधवगढ़ से छत्तीसगढ़ में आये. धर्मदास के पद जन-जन में प्रचारित होने लगे.

लोरिक चंदा, ढोला मारू, आल्हा-उदल की गाथा और भरथरी की कथा छत्तीसगढ़ में आज भी प्रचलित है. पूरे प्रभाव के साथ ये कथायें आज मंच पर रूप ग्रहण करती है. लगभग पाँच सौ वर्षों की यात्रा कर ये कथायें मच पर विराजित हुई है.

छत्तीसगढ़ी में छत्तीसगढ़ के ग्राम्य जीवन में रामलीलाओं की परम्परा रही है. रामलीला में मंच पर भी छत्तीसगढ़ी ने स्वाभाविक रूप से प्रवेश किया. पारसियन थियेटर का प्रभाव छत्तीसगढ़ी लोक मंच पर भी पड़ा. हरिशचन्द्र, ध्रुव, प्रहलाद, मोरध्वज आदि नाटक यद्यपि लिखे तो गये, लोकभाषा के स्पर्श से एक नए रूप में ढाली हिन्दी में, किन्तु यहाँ भी छत्तीसगढ़ी ने प्रवेश प्राप्त कर लिया.

गुरू घासीदास छत्तीसगढ़ के प्रथम सन्त है, जिनकी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी थी. उनके सिद्धांतों को छत्तीसगढ़ की ग्राम्य भाषा में लोगों ने सुना समझा. पंथी गीतों के रूप में ढलकर यही सिद्धांत दिग-तव्यापी हो गये. छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास एवं उसकी व्याप्ति के वृहतर संदर्भो में गुरू घासीदास के अनुयायियों के योगदान का विशेष महत्व है।

संत धर्मदास के बाद गुरू घासीदास ने छत्तीसगढ़ी में काव्यसृजन की ललक को अभिवृद्ध किया. इनके प्रभाव से सृजित कविता में जीवन के मान सिद्धांत तथा मनुष्य की विचारिक यात्रा के प्रमुख पड़ावों को हम समझ पाते है. बलि प्रथा, मूर्ति पूजा तथा मांस मदिरा के खिलाफ छत्तीसगढ़ी जन में जागृति के लिए प्रभावी पदावतियां रची गई.

''मंदिरवा म का करे जइबो, अपन घर ही के देव ल मनइवो.''

गुरू घासीदास का यह कथन धड़कते हुए जीवन को सम्मानित करने के लिए प्रेरित करता है. आबंडर और जड़ता के खिलाफ उठ खड़े होने का आव्हान एसे गीतों के माध्यम से किया गया.

छत्तीसगढ़ी का आधुनिक युग भी धार्मिक कथा की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति से समृद्धि की शुरूवात करता है. पं. सुन्दरलाल शर्मा जी के द्वारा लिखित ''दानलीला'' महाकाव्य है, आज भी आधुनिक के लिए मानक ग्रंथ कहलाता है तथा पं. सुन्दरलाल शर्मा को छत्तीसगढ़ का गांधी भी कहा जाता है. पं. सुन्दर लाल शर्मा कवि होने के साथ ही साथ एक समाज सुधारक तथा समाज सेवा के लिए सामाजिक परिवर्तन को सकारात्मक मोड़ देने के लिए पं. सुन्दरलाल शर्मा ने

Scanned with CamScanner

भिन्न–भिन्न माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया.

लखनलाल गुप्त का जीवन परिचय

छत्तीसगढ़ी साहित्य के विकास में लखनलाल गुप्त का अहम स्थान है. उनका जन्म 1 जुलाई 1933 को बिलासपुर में हुआ. उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा वाराणसी में रहकर पास की थी.

एम.कॉम. टङौर एल.एल.बी. की परीक्षायें उन्होंने पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर से पास की. लखनलाल गुप्त की प्रतिभा बहुआयामी है. छत्तीसगढ़ी में उन्होंन कहानी, नाटक, कविता, निबंध आदि सभी विधाओं पर अपनी लेखनी को गति दी. उन्होंने उपन्यास भी लिखे हैं. उनके ''चन्दा अमरित बरसाइस'' (1965) को छत्तीसगढ़ी को द्वितीय उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है.

इस उपन्यास के संबंध में मुकुटधर पाण्डे का त है – चन्दा अमरित बरसाइस में यथा नाम तथा गुण. पद–पद पर अमृत टपकता है. कथानक सरल और सहज है. आंचलिक जनजीवन का चित्रण स्वाभाविक बन पड़ा है.

लखन लाल गुप्त की प्रकाशित पुस्तकें –

काव्य	सैनिक गान, सत्यमेव जयते, पद्यप्रभा, संझाती के बेरा
उपन्यास	चन्दा अमरित बरसाइस
कहानी एकांकी	सरग ले डोला आइस
आत्मकथा	सुरता के सोन किरन
बाल साहित्य	हाथी घोड़ा पालकी, छत्तीसगढ़ी बाल नाट्य
नाटक	जाग छत्तीसगढ जाग
सोन पान	विजयदशमी का एक प्रतीक चिन्ह है.

जानकी धीवर
एम.ए. हिन्दी (चतुर्थ सेमेस्टर)

Scanned with CamScanner

पं. सुन्दरलाल शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लेख

पं. सुन्दरलाल शर्मा जी का जन्म वि.सं. 1938 पौष अमावस्या (सन् 1881) स्थान राजिम नगर, मृत्यु सन् 1940.

विशेषता – राजिम में रावण की स्थाई प्रतिमा का निर्माण किया जहां विजयादशमी पर्व मनाया जाता है. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पं. सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ के गांधी के नाम से जाने जाते है. आपके पिता कांकेर में वकील थे. शर्मा जी का जीवन समाज सेवा में व्यतीत हुआ. आपकी विख्यात काव्यकृति 'दानलीला' का प्रकाशन सन् 1915 में हुआ था. 'दानलीला' नाम की अनेक प्रतियां प्राप्त होती है. बाजनाथ प्रसाद कृत 'दानलीला' (1913) तथा श्री नर्मदा प्रसाद दुबे कृत दानलीला (सन् (1936) भी छ.ग. की उल्लेखनीय कृतियां है.

तन मन धन से हरिजन वक सुन्दरलाल जी यूं तो ब्राम्हण कुल के पुत्र थे, परन्तु जनसेवा के व्रत ने उनकी पहचान एक तरह से इस रूप में पछन्न रखी और वह हरिजन सेवक के रूप में प्रसिद्ध हुए. परन्तु उन्हें छत्तीसगढ़ी साहित्य क्षेत्र में 'भारतेन्दु हरिशचन्द्र' माना जाता है. उन्होंने छ.ग. 'दानलीला' के अंत में स्वयं अपने विषय में लिखा है.

छत्तीसगढ़ के मक्षोत एक राजिम सहर
जहां जवश महीना भांग भरेथे।
देस देस गांव गांव के
जो रोजगारी भारी
माल असबाब बेंचे खातिर उतरथे।।
राजा और जमींदार मंडल किसान
धनवान जहां जुर के जमात
ले निकरथे
सुन्दलाल इजराज नाम है एक
भाई सुनो तहां कविताई बैठि करथे।

उनके द्वारा रचित 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' को छत्तीसगढ़ी का प्रथम छोटा खण्ड काव्य कहा जाता है. जनप्रिय हुआ वरन इसने अनेक कवियों को इस दिशा में कार्य करने को प्रोत्साहित किया.

'दानलीला' कृषण् काव्य परम्परा की एक सशक्त कृति है. गोपियों के श्रृंगार वर्णन, विप्रलभ्भ भाव आदि के अनेक मनोरम चित्र दानलीला में मिलते है.

जब लै सपना में निहारैथ वो।
तब ले मिलका नई भरवो वो
दिन रात भोला हारान करै,

Scanned with CamScanner

दुखदाई थे दाई जवानी जरै
मैं गोई अब कौन उपाय करौ ष
ये कहूं दहरा बिच बूड़ मरों

'दानलीला' में वर्णित कृष्ण और राधा छत्तीसगढ़ के कृष्ण और राधा है, ब्रज के नहीं. अवधि के प्रसिद्ध छंदों दोहा और चौपाई में ही इस कृति की रचना की गयी है.

शर्मा जी माधवराव सप्रे के समकालीन थे. तत्कालीन साहित्यकारो में से पं.माखनलाल चतुर्वेदी, पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, श्री जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' आपके अभिन्न मित्रों में से थे. संभवतः इसी कारण आपकी साहित्य साधना भी सर्वतोमुखी हुई. काव्य नाटक और उपन्यासों में आपकी लेखनी प्रसुत हूए. 'दुलरूवा' नामक छत्तीसगढ़ पत्रिका के संचालन का श्रेय भी आपको प्राप्त है.

कृतियाँ :–

1. काव्यमूतिवर्षिणी काव्य
2. राजीठा प्रेम पियुष काव्य
3. सीता परिणय नाटक
4. पार्वती परिणय नाटक
5. श्री कृष्ण जन्म अख्यान
6. करूणा पचीस
7. विक्रम शशिकला नाटक
8. करन वध (खण काव्य)
9. छत्तीसगढ़ी दान लीला

छत्तीसगढ़ दान लीला का प्रकाशन छ.ग. के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी. इसका विरोध एवं स्वागत दोनों हुए.

पं. रघुवर प्रसाद द्विवेदी ने हितकारिणी पत्रिका में इसकी कटु आलोचना की. इसके विपरित पं. माधव राव सप्रे ने प्रशंसा करते हुए शर्मा जी को पत्र लिखा. पत्र का उदा. है –

''मुझे विश्वास है कि भगवान कृष्ण चन्द लीला द्वारा मेरे छ.ग. निवासी भाईयों का अवश्य कुछ सुधार होगा.

मेरी यह आशा और भी दृढ़ हो जाती है. जब मैं यह देखता हूं कि छत्तीसगढ़ी निवासी भाइयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है.''

छत्तीसगढ़ 'दानलीला' श्रृंगार रस से ओत प्रोत काव्य है. इसकी भाषा मधुर एवं शुद्ध छ.ग. है.

तरूण पटेल
एम.ए. हिन्दी (चतुर्थ सेमेस्टर)

Scanned with CamScanner

समाज के वास्तविक शिल्पकार होते हैं ''शिक्षक''

(1) शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली :-

5 सितम्बर को भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का जन्म दिवस 'शिक्षक दिवस' केरूप में मनाने जा रहा है। महर्षि अरविंद ने शिक्षकों के सम्बन्ध में कहा है कि ''शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते है। वे संस्कारों के जड़ो में खाद देते है और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में निर्मित करते है।'' महर्षि अरविंद का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक होते है। इर प्रकार एक विकसित, समृद्ध और खुशहाल देश व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। आज कोई भी बालक 2-3 वर्ष की अवस्था में विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता है। इस बचपन की अवस्था में बालक का मन-मस्तिष्क एक कोरे कागज के समान होता है। इस कोरे कागज रूप मन-मस्तिष्क में विद्यालयों के शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के माध्यम से शुरूआत के 5-6 वर्षों में दिये गये संस्कार एवं गुण उनके सम्पूर्ण जीवन को सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

(2) समाज के वास्तविक शिल्पकार होते हैं शिक्षक :-

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे सुन्दर आकृति का रूप दे देता है। किसी भी सुन्दर मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसी प्राकर एक अच्छा कुम्हार वही होता है जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है। यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गयी मूर्ति एवं बर्तन सुन्दर नहीं है तो वह जिस स्थान पर रखे जायेंगे उस स्थान को और अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे। शिल्पकार एवं कुम्हार की भाँति ही स्कूलों एवं उसके शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह अपने यहाँ अध्ययनरत् सभी बच्चों को इस प्रकार से संवारे और सजाये कि उनके द्वारा शिक्षित किये गये सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भाँति होता है जो प्रत्येक बालक को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर उसे 'समाज का प्रकाश' अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर 'समाज का अंधकार' बना सकता है।

(3) बालक के जीवन को सफल बनाने की आधारशिला हमें बचपन में ही रखनी चाहिए :-

एक कुशल इंजीनियर वही होता है जो एक भव्य इमारत या भवन के निर्माण में उसकी नींव को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हुए उसे मजबूत बनाता है। और जब किसी भवन की नींव मजबूत हो तो फिर आप उसके ऊपर बनाये

Scanned with CamScanner

जाने वाले भवन को जितना चाहें उतना ऊँचा बना सकते है। और इस प्रकार से बनी हुई इमारत अन्य भवनों एवं इमारतों की अपेक्षा अधिक समय तक अपने अस्तित्व को बनाये रखने में सफल होती है। ठीक इसी प्रकार से हमें बच्चों के बारे में भी सोचना चाहिए क्योंकि आज के बच्चे ही कल अपने परिवार, समाज, देश तथा विश्व के भविष्य की निर्माता बनेंगे। इसलिए हमें प्रत्येक बच्चे की नींव को मजबूत करने के लिए बचपन से ही उसे उसकी वास्तविकताओं के आधार पर भौतक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार की उद्देश्यपूर्ण एवं संतुलित शिक्षा देनी चाहिए।

(4) उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से ही एक सुन्दर एवं सभ्य समाज का निर्माण संभव :-

हमें प्रत्येक बच्चे को सभी विषयों की सर्वोत्तम शिक्षा देकर उन्हें एक अच्छा डॉक्टर, इंजीनियर, न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारी बनाने के साथ ही उसे एक अच्छा इंसान भी बनाना है। क्योंकि सामाजिक ज्ञान के अभाव में जहाँ एक और बच्चा समाज को सही दिशा देने में असमर्थ रहता है तो वही दूसरी ओर आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में वह गलत निर्णय लेकर अपने साथ ही अपने परिवार, समाज, देश तथा विश्व को भी विनाश की ओर ले जाने का कारण भी बन जाता है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को सर्वोत्तम भौतिक शिक्षा के साथ ही साथ उसे एक सुन्दर एवं सुरक्षित समाज के निर्माण के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने के लिए सर्वोत्तम आध्यात्मिक शिक्षा की भी आवश्यकता होती है।

(5) प्रत्येक बालक को विश्व का प्रकाश बनायें :-

शिक्षक एक सुन्दर, सुसभ्य एवं शांतिपूर्ण राष्ट्र व विश्व के निर्माता है। शिक्षकों को संसार के सारे बच्चों को एक सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य देने के लिए व सारे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' के विचार रूपी बीज बचपन से ही बोने चाहिए। हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता का रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' रूपी बीज बोने के बाद उसे स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण व जलवायु प्रदान कर हमें प्रत्येक बालक को विश्व नागरिक के रूप में तैयार कर सकते है।

(6) समाज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करती है उद्देश्यपूर्ण शिक्षा :-

डॉ. राधाकृष्णन अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्याओं, आनंदमयी अभिव्यक्ति और हँसाने, गुदगुदाने वाली कहानियाँ से अपने छात्रों को प्रेरित करने के साथ ही साथ उन्हें अच्छा मार्गदर्शन भी दिया करते थे। ये छात्रों को लगातार प्रेरित

Scanned with CamScanner

करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका उच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वे अपने शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाए तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। उनका मानना था कि करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परम्पराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नही होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी व उद्देश्यपूर्ण शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती।

(7) शिक्षकों के श्रेष्ठ मार्गदर्शन द्वारा धरती पर ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना संभव :–

भौतिक, समाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों से ओतप्रोत शिक्षकों के द्वारा ही समाज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करके एक सुन्दर, सभ्य एवं सुसंस्कारित समाज का निर्माण किया जा सकता है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन भी ऐसे ही महान शिक्षक थे जिन्होंने अपने मन, वचन और कर्म के द्वारा सारे समाज को बदलने की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की। वास्तव में ऐसे ही श्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन द्वारा इस धरती पर ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना होगी। अतः आइये, हम सभी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को शत् – शत् नमन करते हुए उनकी शिक्षाओं, उनके आदर्शों एवं जीवन–मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् करके एक सुन्दर, सभ्य, सुसंस्कारित एवं शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रत्येक बालक को टोटल क्वालिटी पर्सन (टी.क्यू.पी.) बनायें।

लक्ष्मीनारायण साहू
एम.ए. हिन्दी साहित्य (तृतीय सेमेस्टर)

Scanned with CamScanner

कामयानी का संक्षिप्त परिचय

जयशंकर प्रसाद

सामान्य परिचय – जयशंकर प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी 1890 में हुआ था. इनकी मृत्यु सन् 15 जनवरी 1937 को हुई थी.

रचनाएँ :–

1.	महाकाव्य	कामायनी
2.	खण्डकाव्य	आंसू, लहर झरना, प्रेम पथिक महाराणा का
3.	नाटक	चन्द्रगुप्त, स्कंद्यगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि
4.	कहानी संग्रह	आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल, छाया
5.	उपन्यास	कंकाल, तितली, इरावती

भावपक्ष – प्रसाद जी प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि है. उनका काव्य अनुभूति प्रधान है. छायावाद के कीर्ति स्तंभ होने के कारण आपका काव्य छायावाद की समस्त भाव रश्मियों एवं कलात्मक सौन्दर्य से परिपूर्ण है. आपकी रचनाओं में प्रेम सौन्दर्य और करूणा की त्रिवेणी प्रवाहित होती है आपकी रचनाओं में प्रेम की धारा दो रूपों में प्रकट हुई है –

01. प्रकृति धर नारी का भाव का आरोप

02. नारी सौन्दर्य के प्रति आकर्षण प्राचीन भारत के गौरव देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना दृष्टिगोचर होती है–

''शापित न यही है कोई तापित पापी न यहाँ है
जीवन वसुधा समतल है, समरस हो जो कि जहां है

प्रसाद जी काव्य आनंद से सिक्त तथा आनंदभाव से आपुरित है. छायावाद की प्रमुख विशेषता रहस्य है. प्रसाद जी प्रकृति के कण–कण में संसार की प्रत्येक श्वास में विराट रहस्यमय सत्ता की उपस्थिति का अनुभव करते है. इस भाव की मनोरम झाँकी प्रसाद जी की निम्न उदाहरण में परिलक्षित होती है –

हे अनंत। रमणीय। कौन तुम ?

आपने अपने काव्य में नारी को महत्व दिया है, क्योंकि नारी अपना सर्वस्व समर्पित करके पुरूष के जीवन में सार्थक करती है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो। विश्वास रजत के नग तल पीयूष स्त्रोत सी वहां करो जीवन के समतल में।

आप मूलतः वेदना के कवि है. उन्होंने अपनी व्यक्तिगत देवना को विश्व की पीड़ा के परिणत कर दिया. आँसू काव्य में वेदना की ऐसी धारा प्रवाहित हुई है जो अन्यंत्र दुर्लभ है।

03. कलापक्ष 1. भाषा – आपके काव्य की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है. प्रसाद जी ने अपने काव्य संग्रह में संस्कृत गर्भित भाषा का प्रयोग किया है. भाषा में भावों का उन्मेष हुआ है एकरसता विद्यमान है. आपकी रचनाएं में एक–एक शब्द रत्नों की तरह जड़ा हुआ है. आपने भाषा को अभिद्रा के घेरे से निकाल कर लाक्षणिकता प्रदान की है.

2. अलंकार – प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, संदेह, विरोधाभाव आदि अलेकर का सम्यक प्रयोग किया है.

3. छंद – प्रसाद जी की कविताएं छंद वृन्द व छंदमुक्त दोनों प्रकार की है.

Scanned with CamScanner

4. शैली – प्रसाद जी ने अर्थ विस्तार की दृष्टि से मोहक प्रतीक शैली के द्वारा सौन्दर्य प्रदान किया है. भावपूर्ण शैली में लेखणीय अत्यंत प्रभावशाली बन गयी है. नवीन उपमानों से यह युक्त है. ओजगुण का प्रयोग हुआ है. लाक्षणिकता और चित्रात्मक आपकी प्रभावशाली शैली की विशेषता है. आपकी गीतों में गेयता सरसता, अनुभूति की महत्ता संक्षिप्तता प्रभावोत्पादकता आदि सभी गीत शैली की विशेषताएँ परिलक्षित होती है.

साहित्य में स्थान – निसंदेह प्रसाद जी हिन्दी के युग प्रवर्तक साहित्यकार एवं छायावाद काव्यधारा के अमर गायक एवं शीर्षस्य कवि है.

कामायनी में विभिन सर्ग है, जिनका नाम लिखित है –

1. चिता – कविता

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह.
एक पुरूष भीगे नयनों से देख रहा था.
प्रलय प्रवाह नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था
एक सघन, एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेत

2. आशा – कविता

उसा सुनहरे तीर बरसती जयलक्ष्मी सी
उदि हुई, उखर पराजित कालरात्रि भी जल में अंतनिर्हित हुई.

3. श्रद्धा – कविता

कौन तुम ? संसृति – जलनिधि तीर तरंगों से फेंकी मणि एक
कर रहे निर्जन का चुपचाप प्रभा की.
धारा से अभिषेक मधु विश्रांत और एकांत जगत का
सुलझा हुआ रहस्य एक करूणामय सुन्दर मौन और अंचल मन का आलस्य

4. काम – कविता

मधुमय वसंत जीवन वनके, वह अंतरिक्ष की लहरों में,
कब आये थे तुम चुपके से रजनी के पिछले पहरों में
क्या तुम्हें देखकर आते यों मतवाली कोयल बोली थी
उस नीरवता में अलसाई कलियों ने आंखे खोली थी.

5. वासना – कविता

चल पड़े कब से हृदय दो पथिक से अआंत,
यहां मिलने के लिए जो भटकते थे भ्रांत
एक ग्रहपति, दूसरा था अतिथि वगित विकार
प्रश्न यथा यदि एक, तो उत्तर द्वितीय उदार

6. लज्जा – कविता

कोमल किसलय के चंचल में नहीं कलिका जो छिपती सी

Scanned with CamScanner

गोधूली के धूमिल पट में दीपक के स्वर दिपती सी

7. कर्म – कविता

कर्मसूत्र – संकेत सदृश थी सोमलता तब मनु को,
चढ़ी शिंजिनी सी, खींचा फिर उसने जीवन धनु को

8. ईर्ष्या – कविता

पल भर की उस चंचलता ने खो दिया हृदय का स्वाधिकार
श्रद्धा की अब वह मधुर निशा फैलाती अंधकार।

9. इड़ा – कविता

किस गहन गुहा ने अति अधीर झंझा प्रवाह सा निकला यह जीवन विक्षुब्ध महासमीर

10. स्वप्न – कविता

संध्या अरूण जलज केसर ले अब तक मन थी बहलाती
मुरक्षा कर कब गिरा तामस्स, उसको खोज कहां पाती

11. संघर्ष – कविता

श्रद्धा का स्वप्न किंतु वह सत्य बना था.
इडा संकुचित उधर प्रज्ञा से क्षोभ घना था.

12. निर्वेद – कविता

वह सारस्वत नगर पड़ा था क्षुब्ध, मलिन कुछ मौन बना
जिसके ऊपर विगत कर्म का विष विवाद आवरण तना

13. दर्शन – कविता

वह चंद्रहीन थी एक रात जिसमें सोया था स्वच्छा प्रातः

14. रहस्य

ऊर्ध्व देश उस नील तमस में स्तब्ध हो रही अचल हिमानी
पथ थककर है लीन, चतर्वेद देज रहा वह गिरि अभिमानी

15. आनंद – कविता

चलता जा धीरे–धीरे वह एक यात्रियों का दल
सरिता के रम्य पुलिन में गिरिपत्र से, निज संबल

साहित्य में स्थान

कामायनी में अनेक सर्ग है, जिसमें विभिन्न मनोभाव व मनोविकार का चित्रण किया गया है, जिसमें कवि को अत्यंत सफलता प्राप्ति हुई है. प्रसाद जी की रचना कामायनी का अत्यंत महत्वपूर्ण है. और कामायनी सफल महाकाव्य के रूप में दिखलाई देता है. निःसंदेश प्रसाद जी हिन्दी युग के प्रवर्तक साहित्यकार एवं छायावादी काव्यधारा के अमर गायक एवं शीर्षस्थ कवि है.

गंगा प्रसाद साहू
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

Scanned with CamScanner

छत्तीसगढ़ी जीवन

ये कैसन ठिठोली भैया, न हाँसी न बोली ग।
अंतस भीतर जहर भरे हे, भाखा लागत है गोली ग।
चेहरा उपर चेहरा साजे, साज सज्जा के दूनिया।
मनखें मति म भरम के जाल, मजा म बैगा गुनियाँ।
का कहना हे, का होवत हे, भइगे दाँत निपोरी ग।
बड़े हे दूनिया, मनखे छोटे, फूट–फूट मा हे परिवार।
चुगली–चाली, चरचा–गाली, घर ले बने तो लागे खार।
गॉव– गली मा गुझांझसी, अनबोलना हम झोली गा।
कतका सुघ्घर रेहन सबोझन, कका बड़ा अऊ काकी ।
कोन टोनचाही नजर लगा दिस, घर होगे दो फांकी।
बाँटा होगे घर कुरिया के, बल होगे कमजोरी ग।

शीतल वर्मा
एम.एस.सी द्वितीय सेमेस्टर (गणित)

हमर छत्तीसगढ़

हमर छत्तीसगढ़ के माटी के , महिमा बड़ा महान हे,
इहाँ जन्में वीर नारायण, साहस के पहचान हे,
अरपा पैरी के धार, बोहाथे, इन्द्रावती वरदान हे,
महानदी कस पावन नदिया, देव भूमि के पहचान हे,
चित्रकोट अऊ तीरथगढ़, के शोभा बड़ निक लागे,
बादर हा गिर के भुंईयाँ मा बोहाइस, दूध के धार बोहागे,
तीन नदियाँ के संगम राजिम, छत्तीसगढ़ परयाग हे,
अवरा भवरा पेड़ तरी मा, गुरु बाबा धरे बैराग हे,
इहाँ के डोगरी अऊ पहाड़ी, सब के मन ला भाथे,
इहाँ जऊन हा आथे, ओहा इहाँ के होके रहि जाथे,
माता शबरी के जूठा बोईर खाके, राम–लखन काटे इहाँ बनवास हे,
इहा बिराजे सब देवी देवता, इंहा के स्वर्ण इतिहास हे,
लव कुश के हे अलग चिन्हारी, चन्द्रखुरी के माँ कौशिल्या मंदिर हे,
गिरौदपुरी के पावन भुँइया, संतके रद्दा देखाथे,
अइसन छत्तीसगढ़ के में रहवैया, छत्तीसगढ़ के गुन ला गाथँव,
दूनों हाथ ला जोर के, मै हां शीश नवाथँव।।

कु. जानकी निर्मलकर
बी.ए.तृतीय

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner